SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में व्यंग्य–प्रेम गाथाएं

राजेश शर्मा, Ph.D., हिंदी विभाग
जेएलएन महाविद्यालय, नवागढ़, जांजगीर, छत्तीसगढ़ भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश शर्मा, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 30/09/2023
Revised on : -----
Accepted on : 09/10/2023
Plagiarism : 00% on 30/09/2023

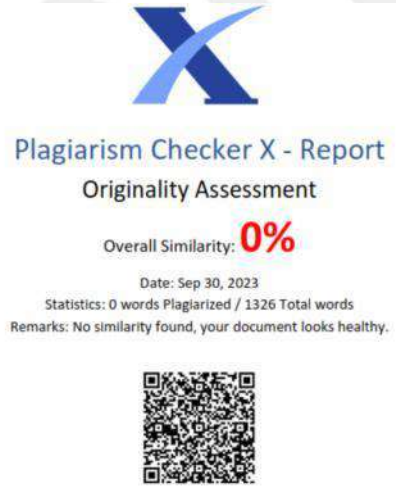

शोध सार

''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों–मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।'' जहाँ हिन्दी में व्यंग्य को उलाहना, ताना, कोसना आदि शब्दों से जाना जाता है, वहीं छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य में आभा, अभियान या आभा मारना कहा जाता है। सच्चाई की याद दिलाने के लिए ऐसे शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करना जिससे उस व्यक्ति को जिसे यह बात कही जाए, वास्तविकता का बोध हो जाए, व्यंग्य कहलाता है। छत्तीसगढ़ी में विभिन्न लोकगाथाएं प्रचलित हैं जो विभिन्न जातियों के द्वारा गायी जाती हैं। यदि उन्हें उन जातियों की धरोहर कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं को विभिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है जिसमें ''प्रेम गाथाएं'' एक विषय है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथा ''अहिमनरानी'' में अहिमन के पति राजा वीर सिंह पत्नी को नई साड़ी पहने देखकर नाराज हो जाते हैं। राजा मायके पहुँचाने के बहाने रास्ते में उसे मार डालते हैं। भाई के प्रयास से रानी जीवित हो जाती है। एक दिन रानी का व्यापारी भाई व्यंग्य में कहता है कि हे राजा तुम अपनी पत्नी को भी नहीं पहचान रहे हो। भाई के व्यंग्य ने राजा की आँख खोल दी वह अपनी पत्नी को पहचान लेता है। वहीं एक अन्य छत्तीसगढ़ी लोकगाथा ''रेवा रानी'' में भी व्यंग्य का सुंदर पुट है। एक दिन रानी पवन रेखा अपने पति उग्रसेन से पूछकर स्नान करने के लिए सागर जाती है, साथ में सेविकाएं भी हैं। रास्ते में उसे दुदुंभी नामक राक्षस देख लेता है, वह रानी का रास्ता रोक लेता है। रानी के बहुत विरोध करने पर भी वह जबरदस्ती अपनी इच्छा की पूर्ति कर लेता है। रानी का चेहरा उदास हो जाता है, इस स्थिति को देखकर सहेलियां उस पर व्यंग्य कसतीं हैं। इससे यह स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ी लोककथाओं में भी व्यंग्य का भरपूर प्रयोग हुआ है।

मुख्य शब्द

छत्तीसगढ़ी, लोकगाथा, लोककथा, प्रेमगाथा.

''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों–मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।''[1]

सच्चा व्यंग्य समीक्षक नहीं बल्कि सहभोगी होता है। इस प्रकार व्यंग्य में आक्रोश का आधिक्य नहीं होता। व्यंग्यकार अत्यंत संयम के साथ अपने क्षोभ को अभिव्यंजित करता है। अपने आसपास व्याप्त बुराइयों, कमजोरियों पर हॅस कर निकल जाना ही व्यंग्यकार का स्वभाव नहीं है, और न ही व्यंग्यकार अपने क्रोध से समाज में तोड़फोड़ मचाता है। उसकी ज्वाला तो हृदयगामी होती है, और उसकी अभिव्यंजना भी उतनी ही सूक्ष्म होती है।

जहॉ हिन्दी में व्यंग्य को उलाहना, ताना, कोसना आदि शब्दों से जाना जाता है, वहीं छत्तीसगढ़ लोकसाहित्य में आभा, अभियान या आभा मारना कहा जाता है। सच्चाई की याद दिलाने के लिए ऐसे शब्दों या वाक्यों का प्रयोग करना जिससे उस व्यक्ति को जिसे यह बात कही जाए, वास्तविकता का बोध हो जाए, व्यंग्य कहलाता है।

व्यंग्य में कहीं न कहीं मानव की त्रुटि छिपी रहती है जिससे वह अनभिज्ञ रहता है। कभी–कभी तो वह जानबूझकर व्यंग्य का पात्र बनता है। जब कोई व्यक्ति व्यंग्य शैली में कुछ बातें कह देता है तब उसे अपनी त्रुटि का भान होता है। जबसे इस धरा पर मानव संवेदना का पदार्पण हुआ तब से व्यंग्य का भी प्रादुर्भाव हुआ है। मनुष्य अपने दैनिक जीवन में किसी न किसी बहाने व्यंग्य का प्रयोग करता है।

व्यंग्य का संसार व्यापक है। वह पूरे विश्व में व्याप्त है। जहाँ भी मानव है, वहाँ व्यंग्य है, इसलिए मानव को त्रुटियों का पुलिंदा कहा गया है।

इसी परिप्रेक्ष्य में ''लोकगाथा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए डॉ. शंकर लाल यादव लोकगाथा को महाकाव्य मानते हैं।''[2]

छत्तीसगढ़ी में विभिन्न लोकगाथाएं प्रचलित हैं जो विभिन्न जातियों के द्वारा गायी जाती हैं, यदि उन्हें उन जातियों की धरोहर कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। वीरगोपल्ला या देवार गीत देवार जाति के द्वारा, बांसगीत के माध्यम से विभिन्न वीरों की वीरता का यदुवंशियों द्वारा, पंडवानी सतनामी, सूर्यवंशी एवं शिकारी जातियों द्वारा विशेष रुचि के साथ गाये जाते हैं। अब वे लोकगाथाएं उपर्युक्त जातियों के लिए आजीविका का साधन बनी हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं को विभिन्न वर्गों में विभक्त किया गया है जिसमें ''प्रेम गाथाएं'' एक विषय है।

छत्तीसगढ़ी लोकगाथा ''अहिमनरानी'' में अहिमन के प्रति राजा वीर सिंह अपनी पत्नी को नई साड़ी पहने देखकर नाराज हो जाते हैं। राजा उसे उसके मायके पहुॅचाने के बहाने रास्ते में उसे मार डालते हैं। उधर से अहिमन रानी के व्यापारी भाई जिसने उसे नई साड़ी दी थी अपने बैलों को लेकर आता है। वह भगवान महादेव व पार्वती से प्रार्थना करता है। भगवान महादेव व पार्वती की कृपा से रानी जीवित हो जाती है। रानी अपने व्यापारी भाई के साथ चली जाती है। आगे वे उसी गाँव में पड़ाव डालते हैं जहाँ रानी का ससुराल था। एक दिन रानी गेहूँ पिसाने के बहाने अपने ससुराल जाती है। रानी की सास घर में रहती है, उसके यहां गरीबी आ गई थी। रानी आधा आटा अपनी सास को देती और आधा अपने तम्बू में लेकर आती है। यही क्रम आठ दिन चलता है, तब एक दिन राजा वीर सिंह तम्बू में जाता है तथा व्यापारी भाई व्यंग्य में कहता है कि हे राजा तुम्हारी ऑखों से नहीं दिखता, तुम अपनी पत्नी को भी नहीं पहचान रहे हो:

''सुन ले व्यापारी मोर बात रे
कि तोर बहिनी ल मोर बर बिहा दे
पइसा अउ कौड़ी जतका लेबे ओतका देहंव

कि तोर बहिनी ल देबे बिहाव
व्यापारी ह एक दिन सुनय, दूसर दिन सुनय
कि तोर ऑखी नइ दिखाय
अपन मनखे ल तैं नइ चिन्हय
का होगे तुम्हार ऑखी रे
अब तो व्यापारी देबय पठोई.....।।''[3]

व्यापारी भाई के व्यंग्य ने राजा की ऑखे खोल दी, वह अपनी पत्नी को पहचान लेता है। उसे अपनी भूल का पता चल जाता है। यहॉ पर व्यंग्य का सुंदर उदाहरण है जिसके द्वारा राजा को वास्तविकता का भान हो जाता है।

इसी प्रकार छत्तीसगढ़ी लोकगाथा ''रेवा रानी'' में भी व्यंग्य का सुंदर पुट है। एक दिन रानी पवन रेखा अपने पति उग्रसेन से पूछकर स्नान करने के लिए सागर जाती है। साथ में सेविकाएं भी हैं। रास्ते में उसे दुदुंभी नामक राक्षस देख लेता है। वह रानी का रास्ता रोक लेता है। रानी के बहुत विरोध करने पर भी वह जबरदस्ती अपनी इच्छा की पूर्ति कर लेता है। रानी का चेहरा उदास हो जाता है। इस स्थिति को देखकर रानी की सहेलियां व्यंग्य कसती हुई कहती हैं कि क्या बात है रानी नयन का काजल धुल गया है, बाल बिखर गये हैं, साड़ी, पोलखा, चोली, ओढ़नी भी फट गई है, जरूर कोई बात है। तब रानी बहाना बनाती है तथा कहती है कि रास्ते में एक बंदर के कोख की यह दशा हुई है:

''भटकत–भटकत चेरिया छोहरिया
भेंट भइगे रानी के साथ हो लाल
नैना के कजरा तोर नइ हे रानी
मुंड के झबुआ छरियाय हो लाल
अंगे के लुगरा हो छतिया चोलिया
कइसे के चिराये हे दीदी मोर आज हो लाल.....।।''[4]

सहेलियों के इस प्रकार पूछने पर रानी जवाब देती है:

''जंगल के बेंदरा आके ओ बहिनी
ये गति करिसे मोर हो लाल
सब झन अपन–अपन दुख ल बताइन
रानी के बात ल पतियाइन हो लाल.....।।[5]

सहेलियॉ रानी के साथ थीं तथा वे रास्ते में रानी को दुदुंभी नामक राक्षस के द्वारा छेड़छाड़ करते देखती हैं। वे रानी की दशा देखकर ताना मारती हैं। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में ऐसी प्रेम गाथाएं भरी पड़ी हैं जिनमें आपसी संवाद के माध्यम से व्यंग्य के साथ उद्देश्य भी पूरा हो जाता है।

निष्कर्ष

व्यंग्य में आक्रोश का आधिक्य नहीं होता। अपने आसपास व्याप्त बुराइयों, कमजोरियों और हालात पर कटाक्ष करना व्यंग्य का मूल तत्व होता है। हंगामे के बजाय इसका उद्देश्य सुधारात्मक होता है। छत्तीसगढ़ी लोकगाथाओं में भी ऐसा ही प्रयोग हुआ है ताकि 'प्रेमगाथा' प्रसंग के अतंर्गत व्यंग्य के माध्यम से सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे।

संदर्भ सूची

1. परसाई हरिशंकर, (2004) *''सदाचार का ताबीज''* भातीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दिल्ली, पृष्ठ –8।
2. यादव शंकर लाल, (2000) *'हरियाणा प्रदेश का लोकसाहित्य''* हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृष्ठ–27।
3. शुक्ल दयाशंकर, (1969) ''छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन'', पृष्ठ–50।
4. शुक्ल दयाशंकर, (1969) ''छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन'', पृष्ठ–252।
5. शुक्ल दयाशंकर, (1969) ''छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य का अध्ययन'', पृष्ठ–253।

****